रोग और कीट नियंत्रणः

डाउनी मिल्डयूः

बाजरे में डाउनी मिल्डयू रोग एक फफूंद जनित रोग है जिसे रोकथाम के लिए रोडोमिल Mz 1.5 ग्राम/लिटर पानी में मिला कर छिड़काव करना चाहिए।

स्मटः

इस रोग के होने पर हेक्साक्लोनाजोल 1 ग्राम/लीटर पानी में मिला कर छिड़काव करना चाहिए।

अर्गटः

इस रोग से बचाव के लिए साफ (Saaf) 2 ग्राम/लिटर दवा का छिड़काव करना चाहिए।

शूट फलाईः

शूट फलाई बाजरा को नुकसान करने वाला सामान्य कीट है जिसे Dichlorovos 1 ml/lit. के दर से छिड़काव करने से किट नियंत्रित रहता है।

परिपवक्ताः

बाजरा का पौधा 70 से 80 दिनों में तैयार हो जाती है। अगर चारा के लिए उगाया जाता है तब इसके पौधो की कटाई 55–60 दिनों के अन्तराल पर या 50 प्रतिशत फुल आने पर करनी चाहिए।

उत्पादनः

बाजरा का उत्पादन 30 से 35 क्विन्टल/हे0 होता है और अगर हरे चारा के लिए करते है तब इसका उत्पादन 600 से 800 क्विन्टल/हे. होता है।

बाजरा का उपयोग

बिस्किट बनाने में • रोटी बनाने में • बाजरा का खिर बनाने में • बाजरा का लडडू बनाने में • हलवा एवं दलिया बनाने में

आलेखः
डॉ. अरूण कुमार,* डॉ. योगेन्द्र प्रसाद, डॉ. रेखा सिन्हा,
डॉ. मनोज कुमार वर्णवाल, डॉ. सविता एक्का एवं डॉ. नरेश प्रसाद यादव
*मो.: 7903866730 | Email : arun.bau4@yahoo.co.in

Technical Bulletien No. GPB/2023/03

annapurnaprinters.mc@gmail.com • 98357 78101

INTERNATIONAL YEAR OF MILLETS 2023

पोषक अनाज बाजरे (Pennisetum typloides L.) की उन्नत खेती

राज्य स्तरीय कृषि प्रबंधन प्रसार–सह–प्रशिक्षण संस्थान
(समेति), झारखण्ड
द्वितीय तल्ल, कृषि भवन, कांके रोड, राँची, झारखण्ड
www.sameti.org sametijharkhand@rediffmail.com

मोटे अन्न उत्पादन का आधा भाग बाजरा होता है। बाजरा देश के शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्रो में उगाई जाने वाली मुख्य खद्यान्न के साथ–साथ हरे चारे के रूप में उगाई जाने वाली फसल है। बाजरे की फसल खरीफ में बोई जाने वाली कम लागत और बिना सिंचाई वाली फसल मानी जाती है। जो कम वर्षा (250–750 मिली. मी.), कम उर्वरता, उच्च लवणता एवं उच्च तापमान वाली जलवायु में उगाया जा सकता है। बाजरा देश में प्रमुख रूप से मोटे और गर्म अनाज फसलों की श्रेणी में आता है, जिसकी ज्यादातर खपत और मांग नवम्बर से फरवरी तक रहती है। सर्दियों में बाजरा खाने से शरीर मजबूत और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

बाजरे का स्वास्थ्यवर्द्धक लाभ

- कोलस्ट्रॉल लेवल को कन्ट्रोल करता है। • ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखता है।
- पाचन क्रिया को ठिक रखता है। • मधुमेह को ठिक रखता है।
- कैंसर को रोकने में मदद करता है। • अस्थमा दूर करता है।
- वजन कम करने में मदद करता है। • शरीर को अधिक उर्जा (एनर्जी) देता है।
- एनीमिया रोग को ठिक करता है। • खाद्य रेशा की प्रचुरता।

बाजरे में पोषक तत्व की मात्रा (100 ग्राम)

कैलोरी :	361	कैल्सियम :	8 मिली ग्राम
प्रोटीन :	12 ग्राम	फॉल्फोरसः	242 मिली ग्राम
वसा :	5.4 ग्राम	सेलेनियमः	2.7 मिली ग्राम
रेशा :	11.5 ग्राम	कॉपर :	0.8 मिली ग्राम
पोटाशियमः	195 मिलीग्राम	मैंगनिज :	1.6 मिली ग्राम
कार्बोहाइड्रेटः	72 ग्राम	सोडियम :	5 मिली ग्राम
लोहा :	6 मिली ग्राम	ओमेगा 3 फैटो एसिड :	118 मिली ग्राम
मैंगनेशियमः	114 मिली ग्राम	जिंक :	1.7 मिली ग्राम

भूमि का चुनावः

इसके लिए हल्की या बलुई दोमट मिट्टी उचित होती है। बाजरा की खेती के लिए उचित जल निकास वाली टांड़ या मध्यम जमीन उपयुक्त होता है। यहाँ के किसान नीचे के जमीन में धान की खेती करते है, लेकिन ऊपर का टाड़ जमीन पानी के अभाव में खाली रह जाता है। अतः वैसी जमीन जहाँ पानी का जमाव नहीं होता है। वहाँ बाजरा की खेती करे, तो फसल अच्छी होगी, क्योंकि बाजरा का पौधा जल जमाव को सहन नहीं करता है।

खेत की तैयारीः

जमीन की तैयारी के लिए ग्रीष्म ऋतु में एक गहरी जुताई करनी चाहिए। बुआई के पहले समुचित पोषक तत्व पूरी करने के लिए 10–15 टन गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में डाल कर अच्छी तरह मिला दें। बुआई से पहले 40 कि.ग्रा./हे. नाइट्रोजन, 20 कि.ग्रा./हे., फॉस्फोरस तथा 20 कि.ग्रा./हे. पोटाश डालना चाहिए।

उन्नत प्रभेदः

एम.पी.– 7792, एम.पी.– 7878, एम.पी.– 7872, कॉवेरी सुपर बॉस धनशक्ति

दाना/अन्न के लिए : पूसा 443, एच. एच. वी.–216

चारा फसल के लिए : जाइन्ट बाजरा

cht nj : 10–12 किलो ग्राम/हे.

चारा फसल के लिए : 20 किलो ग्राम/हे.

बुआई का समयः

जुन–जुलाई

बीज उपचारः

बीज बोने के पहले बीज को वेवीस्टीन 2 ग्राम/किलो बीज की दर से उपचारित कर बुआई करने से फफूंदजनित रोगो से बचाव किया जा सकता है।

बुआई विधिः

अच्छी उपज के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी : 40 से.मी.

पौधे से पौधे की दूरी : 15 से.मी.

चारा फसल के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी : 30 से.मी.

खरपतवार नियंत्रणः

बुआई के दुसरे या तीसरे दिन एट्राजिन 1 से 1.5 लीटर दवा को 800 लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव किया जाए तो खरपतवार नियंत्रण में रहता है या जब पौधा 25 से 30 दिनों का हो जाए तब एक से दो बार निकाई–गुड़ाई करने पर खरपतवार नियंत्रण में रहता है तथा पौधे की वृद्धि अच्छी होती है।